ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(1): 212-215
www.allresearchjournal.com
Received: 15-11-2022
Accepted: 22-12-2022

डॉ. विधान कुमार शुक्ला
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, चन्द्रशेखर शिक्षा महाविद्यालय, बगहा जिला सतना, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. विधान कुमार शुक्ला
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, चन्द्रशेखर शिक्षा महाविद्यालय, बगहा जिला सतना, मध्य प्रदेश, भारत

प्रयागराज जनपद में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. विधान कुमार शुक्ला

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा प्रयागराज जनपद में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है। शोध क्षेत्र के शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि का अध्ययन, दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 63.53 तथा 62.38 तथा मानक विचलन क्रमशः 12.48 तथा 11.97 प्राप्त हुआ। शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। शोध क्षेत्र के ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि का दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 62.20 तथा 56.51 तथा मानक विचलन क्रमशः 12.08 तथा 11.82 प्राप्त हुआ। शोध क्षेत्र के ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि में सार्थक अन्तर पाया गया।

कूटशब्द : प्रयागराज जनपद, माध्यमिक शिक्षा स्तर, शिक्षक, शैक्षिक अभिरुचि

1. प्रस्तावना
शिक्षण प्रशिक्षण की प्रक्रिया में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो अध्येताओं में व्यवहार परिवर्तन के साथ–साथ नैतिकता का संचार करता है। शिक्षक विषय के ज्ञात होते है और अध्येता के व्यवहार परिवर्तन के लिए प्रभावकारी संचार के लिए पूर्णता उत्तरदायित्व होता है। आज के विज्ञान एवं तकनीकी युग में शिक्षण को प्रभावकारी संचार के लिए शिक्षकों को अत्याधुनिक तकनीकी का प्रयोग करना चाहिए। शिक्षक पथ प्रदर्शक होते है वह ज्ञान का सृजन कर अध्येताओं में भौतिक, सामाजिक, मानसिक तथा भावनात्मक विकास को जागृत करता है।
शिक्षा के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित कर सकता है। शिक्षा से ही व्यक्ति सही रूप में चिंतन करना सीखता है। शिक्षा व्यक्तियों का निर्माण तथा चरित्र को उत्कृष्ट बनाती है। शिक्षा एक साधन है। जो व्यक्ति के नैतिक, शारीरिक, संवेगात्मक बौद्धिक एवं आंतरिक ज्ञान को बाहर लाने में योग देने वाली एक क्रिया है। इस प्रकार हम कह सकते है कि व्यक्ति के जीवन में शिक्षा ऐसा परिर्वतन लाती है। जिससे वह निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हो सकता है।
विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक संस्कृत की 'शिक्ष्' धातु से शिक्षा शब्द की उत्पत्ति हुई है। 'शिक्ष्' का सामान्य अर्थ सीखना या सिखाना होता है। वर्तमान में इसी 'शिक्ष्' शब्द का परिवर्तित रूप शिक्षण प्रयोग में आता है। प्रायः शिक्षा शब्द में ही शिक्षा ग्रहण करना अथवा शिक्षा प्रदान करना आदि दोनों के ही भाव निहित होते हैं। शिक्षा का हिन्दी में एक शब्द 'विद्या' भी प्रयोग में लाया जाता है। यह 'विद्या' भी संस्कृत भाषा का शब्द है तथा यह 'विद्' धातु से उत्पन्न हुआ है। 'विद्' धातु के शब्द बहुउपयोगी हैं। जैसे वेद तथा वेत्ति। वेद तथा वेत्ति षब्द का प्रयोग ज्ञान के लिए भी किया जाता है। इसी प्रकार विद् धातु से 'विन्दति' (लाभ के लिए), 'विधते' (शासन के लिए), 'वेदयते' (अनुभूति के लिए) आदि शब्दों का जन्म होता है। अतः 'विद्' धातु से बना विद्या शब्द शिक्षा का सशक्त पर्यायवाची है।
अतः शोध द्वारा यह ज्ञात करना अत्यन्त आवश्यक है कि माध्यमिक शिक्षा स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि के प्रभाव का स्तर कैसा है तथा इसका प्रभाव उनके शिक्षण व्यवसाय पर किस सीमा तक पड़ रहा है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध समस्या का चयन किया है।

2. अध्ययन की आवश्यकता:
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल प्रयागराज जनपद वरन् सम्पूर्ण उत्तरप्रदेश के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि के प्रभाव का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार माध्यमिक शिक्षा स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि के प्रभाव व शासकीय प्रयासों व प्रभावों को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है।

3. शोध की परिकल्पनायें:
प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

4. उद्देश्य:
प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

- शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक रुचि का अध्ययन करना।
- ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक रुचि का अध्ययन करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन:
5.1 भौगोलिक परिसीमन – प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र प्रयागराज जनपद है। इसके अन्तर्गत 7 तहसील – सोराव, फूलपुर, हंड़िया, बारा, करछना, मेजा एवं कोराव हैं।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमन – अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, जनपद अन्तर्गत स्थित माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि को इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

6. शोध विधियाँ:
प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 अवलोकन विधि – शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

6.3 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन :

सारणी 1: न्यादर्श चयन

क्र.	तहसील	विद्यालय संख्या	शिक्षकों की संख्या
1.	सोरांव	04	16
2.	फूलपुर	04	16
3.	हंडिया	04	16
4.	बारा	04	16
5.	करछना	04	16
6.	मेजा	04	16
7.	कोराव	04	16
योग		**28**	**112**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है जिले के सभी तहसीलों से 04–04 विद्यालय जिसमें 02 शहरी एवं 02 ग्रामीण विद्यालय कुल 28 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा अध्ययन हेतु किया गया। शोध कार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 4–4 शिक्षक कुल 112 शिक्षकों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण:
किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक शिक्षा स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि के प्रभाव की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – राय पारसनाथ (2004)[1], बेहार, शरद (1983)[2], पंत, नवीन (2007)[3],पाठक, पी.डी. (2007)[4], श्रीवास्तव, डी.एस. (2006)[5]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय:
उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग में 98 मीटर (322 फीट) पर गंगा और यमुना नदियों के संगम पर स्थित है। यह क्षेत्र प्राचीन वत्स देश कहलाता था। इसके दक्षिण–पूर्व में बुंदेलखण्ड क्षेत्र है, उत्तर एवं उत्तर–पूर्व में अवध क्षेत्र एवं इसके पश्चिम में निचला दोआब क्षेत्र। प्रयागराज भौगोलिक एवं संस्कृतिक दृष्टि, दोनों से ही महत्वपूर्ण रहा है। गंगा–जमुनी दोआब क्षेत्र के खास भाग में स्थित ये यमुना नदी का अंतिम पड़ाव है। दोनों नदियों के बीच की दोआब भूमि शेष दोआब क्षेत्र की भाँति ही उपजाऊ किंतु कम नमी वाली है, जो गेंहू की खेती के लिये उपयुक्त होती है। जिले के गैर–दोआबी क्षेत्र, जो दक्षिणी एवं पूर्वी ओर स्थिति हैं, निकटवर्ती बुंदेलखंड एवं बघेलखंड के समान शुष्क एवं पथरीले हैं। भारत की नाभि जबलपुर से निकलने वाली भारतीय अक्षांश रेखा जबलपुर से 343 कि0मी0 (213 मील) उत्तर में इलाहाबाद से निकलती है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या:
शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्रमांक – 01: "शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 2: शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि का अध्ययन

समूह		शहरी शासकीय माध्यमिक स्तर के शिक्षक	शहरी अशासकीय माध्यमिक स्तर के शिक्षक
समूह की संख्या (N)		56	56
मध्यमान (M)		33.72	32.60
मानक विचलन (SD)		8.68	8.74
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		0.68	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	

df = (56-1) + (56-1) = 55+55 = 110

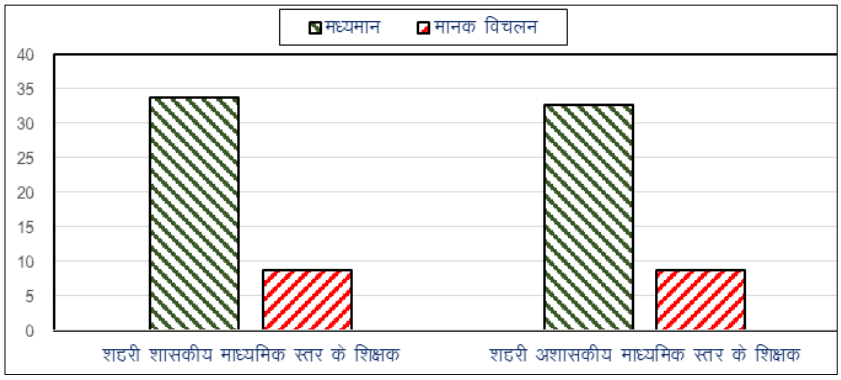

आरेख 1: शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि का आरेखीय निरूपण

उपर्युक्त तालिका क्र. 2 में शोध क्षेत्र के शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि का अध्ययन, दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 33.72 तथा 32.60 तथा मानक विचलन क्रमशः 8.68 तथा 8.74 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. test) किया गया, जिसमें CR का मान 0.68 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1. 96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से कम है। अतः शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि का अध्ययन के लिए दोनों समूहों में सार्थक अन्तर नही पाया गया।

इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना "शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

परिकल्पना कमांक – 02 "ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 3: शोध क्षेत्र के ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि का अध्ययन

समूह		ग्रामीण शासकीय माध्यमिक स्तर के शिक्षक	ग्रामीण अशासकीय माध्यमिक स्तर के शिक्षक
समूह की संख्या (N)		56	56
मध्यमान (M)		64.74	55.68
मानक विचलन (MD)		11.24	10.22
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		4.46	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

df = (56-1) + (56-1) = 55+55 = 110

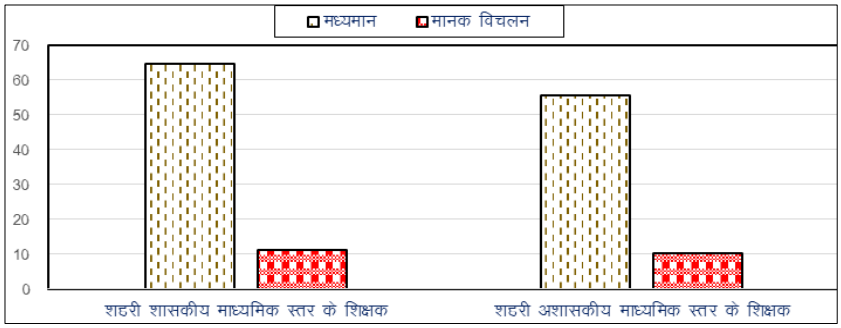

आरेख 2: ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि का आरेखीय निरूपण

उपर्युक्त तालिका क्र. 3 में शोध क्षेत्र के ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि का दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 64.74 तथा 55.68 तथा मानक विचलन क्रमशः 11.24 तथा 10.22 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 4.46 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि के लिए दोनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया।

इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना "ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

अतः परिकल्पना क्र. 2 निरसित होती है।

निष्कर्षः

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है–

- शोध क्षेत्र के शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि का अध्ययन, दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 33.72 तथा 32.60 तथा मानक विचलन क्रमशः 8.68 तथा 8.74 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. test) किया गया, जिसमें CR का मान 0.68 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से कम है। अतः शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।
- शोध क्षेत्र के ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि का दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 64.74 तथा 55.68 तथा मानक विचलन क्रमशः 11.24 तथा 10.22 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. test) किया गया, जिसमें CR का मान 4.46 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिरुचि में सार्थक अन्तर पाया गया।

संदर्भः

1. राय पारसनाथ (2004), अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल आगरा।
2. बेहार, शरद (1983), मध्यप्रदेश का शैक्षिक इतिहास पृ. 46. (पलास, शिक्षा विशेषांक)
3. पंत, नवीन (2007), ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के बढ़ते कदम, 'कुरूक्षेत्र,' मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली वर्ष 53, अंक–11, पृ0 32–34।
4. पाठक, पी.डी. (2007), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं इक्कीसवां संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
5. श्रीवास्तव, डी.एस. (2006), भारत में शिक्षा का विकास, द्वितीय संस्करण, साहित्य प्रकाशन, आगरा.